P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* (Part-1)February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

रूरल इन्स्टीट्यूट – संकल्पना शैक्षिक भूमिका

सोनल आय
शोधार्थी,
ि"ाक्षा शास्त्र विभाग,
विद्या भवन गो.से. शिक्षक महाविद्यालय,
उदयपुर, भारत

सारांश

ग्रामीण विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए 1950 के दशक में रूरल इन्स्टीट्यूट को स्थापित किया गया जिसके तहत शिक्षण के अतिरिक्त यहाँ इस बात का ध्यान दिया जाता है कि विद्यार्थी अपने व्यक्तित्व का बहुआयामी विकास करते हुए अपने क्षेत्र, समाज, राष्ट्र की समस्याओं को समझे तथा इनके समाधान की दिशा में समुचित कार्य करने में सक्षम हो सके। प्रतिभाशाली बालकों को शुल्क में रियायत एवं गरीबी रेखा से नीचे छात्रों का अध्ययन शुल्क में रियायत के साथ साथ अजा/जजा छात्रों हेतु छात्रवृत्ति का प्रावधान करने का इस संसथान का मुख्य प्रयास है। इस संस्थान ने ग्रामीण विकास हेतु महत्वपूर्ण उद्देश्यों को पूर्ण करने में अपनी पहचान स्थापित की है। शोधार्थी ने विकास से सम्बंधित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर रूरल इन्स्टीट्यूट में कार्यरत प्राचार्य, कार्यकर्ता एवं अध्ययनरत विद्यार्थियों का साक्षात्कार तथा दस्तावेजों के माध्यम से यह पता लगाने की कोशिश की गयी कि ग्रामीण विकास से सम्बंधित कौन–कौनसी योजनाओं का क्रियान्वित किया गया तथा उससे समुदाय को क्या लाभ प्राप्त हुए है।

मुख्य शब्द : ग्रामीण विकास, केस अध्ययन, प्रसार कार्यक्रम, ग्रामोत्थान।

प्रस्तावना

गाँवों का रक्त शहरों के ढाचें को मजबूत करने वाला सीमेन्ट बनाता है। मैं चाहता हूँ कि वह रक्त जो शहरों की धमनियों को फूला रहा है, पुनः गाँवों की धमनियों से बहने लगे।

''प. जवाहर लाल नेहरू'' के अनुसार गाँवों को भारतीय सामाजिक और आर्थिक जीवन की रीढ़ कहा जाता है। ग्रामीण विकास के बिना देश का विकास संभव नहीं है। राष्ट्रीय आय का 40% हिस्सा ग्रामीण अर्थव्यवस्था से प्राप्त होता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि ग्रामीणों का सर्वांगीण विकास ही गाँव का विकास है जिसको ध्यान में रखते हुए केन्द्र सरकार ने यह सोचा कि सिर्फ शिक्षा से उनमें परिवर्तन लाया जा सकता है किन्तु साथ में उनकी जरूरतों का भी ध्यान रखना आवश्यक है। ग्रामीण जनता अधिकांश निरक्षर है उनके जीवनयापन के लिए निरन्तर प्रयास की आवश्यकता है। ग्रामीण विकास आज अनिवार्य ही नही अपरिहार्य है क्योंकि आजादी के बाद भी हमारे गाँव उपेक्षित से है। ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी व अशिक्षा दो ऐसे कारण हैं जो आर्थिक विकास को अवरूद्ध किए हुए है इसलिए देश की आर्थिक विकास योजनाओं में ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण ध्यान देना आवश्यक है। इसी उद्देश्यों को ध्यान में रखते हए रूरल इन्स्टीट्यूट को स्थापित किया गया। 10 रूरल के अन्तर्गत 1956 में ग्रामीण विकास के तहत विद्याभवन रूरल इन्स्टीट्यूट की स्थापना की गयी। उस समय के शिक्षा मत्री डॉ. के.एल. श्रीमाली जी विद्याभवन रूरल इन्स्टीट्यूट ने गाँधी के इस आदर्श का अनुसरण किया अर्थव्यवस्था के आधनिकीकरण और शहरीकरण की योजनाओं के साथ–साथ ग्रामीण भारत को भी फलना–फूलना चाहिए। विद्या भवन रूरल इन्स्टीट्यूट ने यह प्रयास किया कि ग्रामीण बच्चों की पहुँच उच्च शिक्षा तक बने तथा इस बात से भी प्रेरित किया था कि स्वतंत्र कलाओं और प्रौद्योगिक में प्रशिक्षित विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर सेवा करें। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस संस्थान को एकीकृत शिक्षण अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों के लिए तथा विद्यार्थियों को ग्रामीण इलाकों में कार्य करने के लिए तैयार करने के उद्देश्य से बनाया गया था। रूरल इन्स्टीट्यूट ने अपने संस्थान को आगे बढ़ाने हेतु अनेक प्रयास किये जिसके अन्तर्गत कृषि से सम्बंधित गतिविधियाँ, लघु उद्योग, कौशल, शिक्षा, सामाजिक सेवाएं, सामूहिक सेवाएँ एवम् सुविधाएँ प्रदान कराने का प्रयास किया गया तथा आर्थिक क्षेत्र के लिए औद्योगिक ईकाईयों का सृजन किया गया। तकनीकी सुधार, कृषि में संस्थागत परिवर्तन, ग्रामीण क्षेत्र की परिसम्पतियाँ, बुनियादी सुविधाओं का विकास ऋण और निवेश में सशक्त व्यवस्था की गयी। जीवन यापन हेतु लघु उद्योग एवं कौशल विकास

हेतु ऐसी छोटी–छोटी योजनाओं का निर्माण किया गया जिससे ग्रामीण अपने अधिकारों के प्रति जागृत हो सके।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में यह जानने का यह प्रयास किया गया रूरल इन्सटीट्यूट उदयपुर में स्थापित किया गया तथा किन – किन परिस्थितियों में रूरल इन्स्टीट्यूट को स्थापित किया गया एवं संस्थान के उद्देश्य एवं समुदाय में इसकी क्या भूमिका रही तथा किस रूप में यह विकसित होता चला गया आगे उसके विकास की भावी सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ है।

''बेहतर जीवन के लिए गुणवत्ता वाले शिक्षा, शोध और नवाचारों के माध्यम से ग्रामीण युवाओं को सशक्त बनाना'' के उद्देश्य से 1956 में विद्याभवन रूरल इंस्टीट्यूट महाविद्यालय इस विद्याभवन सोसायटी की बहुआयामी ग्रामीण को व शहरी लोगों को शिक्षा प्रदान करने की मुख्य शाखा हैं। इस संस्थान का मुख्य लक्ष्य सस्ती एवं सुलभ कीमतों पर आमजन को असाधारण शिक्षा प्रदान करना, योग्यता के अनुसार व्यक्तियों को पूर्ण सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए सुविधाएँ प्रदान करना, विधार्थियों के जीवन में व्यापक और खुले दिमाग वाला दृष्टिकोण विकसित करने के लिए विद्यार्थियों को अपने वातावरण में खुद को समायोजित करने के लिए सक्षम करने के लिए व समाज के प्रति उत्तरदायित्व की गहरी भावना के साथ उपयोगी नागरिक तैयार करना एवं बाल प्रशिक्षण के वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करना। विशेषकर युवाओं को आत्म निर्भर बनने के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना तथा ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में उपयुक्त साधनों के माध्यमों से शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना। इसके अतिरिक्त कार्यकर्ताओं को ग्रामीण विकास के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना। विद्याभवन ग्रामीण संस्थान भविष्य की मांगों की नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी की बढ़ती भावना को विकसित करने के लिए स्थापित किया गया। यह संस्थान ग्रामीण छात्रों के पूर्ण विकास के लिए शैक्षिक वातावरण बनाने का प्रयास करता रहा है। यह संस्थान तीन गुणा प्रणाली का पालन करती है जैसे शैक्षणिक, सह पाठ्यचर्या और अतिरिक्त पाठ्यक्रम प्रबंध समिति, आईक्यूएसी और विभाग के प्रमुखों द्वारा आयोजित नियमित बैठक संस्थागत नीतियों के सफल निष्पादन में मदद करती है तथा इसके अन्तर्गत तीन चीजें महत्वपूर्ण थी–ग्रामीण सेवा, हेल्थ सेवा, पंचायती राज संस्थाएँ। संस्थान के पहले निर्देशक श्री केसरीलाल बोर्डिया थे। उनकी देखरेख में शुरू किए गए कोर्स एक साल के सेनिटरी इंस्पेक्टर कोर्स और प्रोडक्शन सेक्शन (फैकल्टी डॉ मिस्ट्री लेबर फील्ड़ सुपरवाइजर तकनीकी के समर्थन थे) यह परीक्षा ग्रामीण उच्च शिक्षा परिषद शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार नई दिल्ली द्वारा आयोजित की गई थी। संस्थान की स्थापना के बाद से ही यह राज्य अनुदान के लिए हकदार था लेकिन भारत अनुदान का 50% दे रहा था। राज्य सरकार को कुल व्यय पर घाटा बनाना पड़ता था जो हमेशा 80% से कम काम करता था। गैर आवर्ती अनुदान का 75% केन्द्रीय द्वारा चुकाया जाता था। राज्य सरकार ने व्यय का 25% योगदान देना उचित समझा। सरकार द्वारा अनुमोदित बजट राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित के रूप भारत का इलाज किया गया था।

भारत सरकार की नीति में परिवर्तन और संस्थान द्वारा सामना की जाने वाली वित्तीय कठिनाइयों के कारण यह संस्थान धीरे धीरे एक स्नात्तकोत्तर कॉलेज में बदल गया। सन् 1963 से वर्तमान में यह पीजी (वीबीआरआई) महाविद्यालय के रूप में कार्यरत है। स्थापना के समय यह राजस्थान विश्वविद्यालय से जुड़ा था। 1964 में उदयपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद यह उदयपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हुआ जिसे बाद में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के नाम से जाना गया। 1964 में एम.ए.आर. ग्रामीण समाज शास्त्र, अंग्रेजी, समाज शास्त्र, राजनीति विज्ञान और यूजी स्तर पर भूगोल, 1965 एवं ग्रामीण समाज शास्त्र राजस्थान में बी.बी.एम. प्रारम्भ करने वाला यह प्रथम महाविद्यालय है। इसके साथ ही आँगनवाड़ी कार्यक्रम शिशुओं की देखभाल एवं कल्याण के लिए महिलाओं को प्रशिक्षित करने हेतु संचालित किया जाता है। यही नहीं नियमित शिक्षा से वंचित छात्रों को शिक्षा प्रदान करने के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा प्रदान करने वाला अध्ययन केन्द्र भी स्थापित किया गया जिनमें लगभग 45 पाठ्यक्रमों में पत्राचार द्वारा शिक्षा की व्यवस्था उपलब्ध है। महाविद्यालय में पुस्तकालय, प्रयोगशाला, छात्रावास, व्यायामशाला, क्रीड़ा क्षेत्र की पर्याप्त सुविधाएँ है। महाविद्यालय के लिए यह गौरव का विषय है कि हजारों विद्यार्थी यहाँ शिक्षा प्राप्त कर देश–विदेश में अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय दे रहा है। यहाँ से अब तक हजारों अफ्रीकी, एशियाई विद्यार्थियों ने भी सफलतापूर्वक अपनी शिक्षा प्राप्त की है। इस महाविद्यालय की यह विशेषताएँ है कि विशाल एवं मुक्त सुन्दर परिसर है। रोजगार एवं उच्च शिक्षा सम्बंधी परामर्श एवं मार्गदर्शन, रोजगार हेतु केम्पस, साक्षात्कार की व्यवस्था राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय खिलाड़ियों को शुल्क में विशेष छूट तथा इसके अतिरिक्त वर्तमान में रूरल डवलपमेंट (R.D.) एक्सटेंशन को भी स्थापित किया गया है।

कॉलेज के द्वितीय चक्र मान्यता के लिए एनएसी लास्ट टीम ने 27–29 नवम्बर 2017 को वीबीआरआई का दौरा किया था। एन एसी की पीयर टीम के सदस्यों ने गाँधीवाड़ा ग्रामीण संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी) गांधीग्राम तमिलनाडू में जिला डिडीगुल युनिवर्सिटी सह समन्वयक प्रो. आर.एम. रंगनाथ बैगलोर विवि के पूर्व रजिस्ट्रार और सदस्य डॉ विवेकानन्द शर्मा ने राष्ट्रीय आंकलन और प्रत्याथन परिषद (एनएएसी) ने इस संस्थान को (बी) ग्रेड से सम्मानित किया।

वर्तमान में यह संस्थान विगत वर्षों से पुनः ग्रामीण विकास हेतु कार्यक्रम आयोजित कर रहा है तथा इस संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष काया में N.S.S. कैम्प आयोजित किया जाता है। रूरल इन्स्टीट्यूट के विद्यार्थियों द्वारा गाँव जाकर ग्रामीणों को उनके अधिकारों के प्रति जाग्रत किया जाता है। मले के माध्यम से रोजगार को बढ़ाने का प्रचार–प्रसार किया जाता है जिससे ग्रामीणों का

जीवनयापन हेतु आत्म निर्भर बनाया जाये तथा मेले के माध्यम से शिक्षा, कुरीतियों का अन्त तथा स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया जाता है तथा एक बार पुनः छात्रों का रूझान विज्ञान, वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी विषयों की तरफ बढ़े अतः इस साथ कुछ चुने हुए विषयों में स्नात्तकोत्तर पाठ्यक्रमों में अध्ययन की सुविधा भी प्रदान करता है साथ में दुर्बल बालकों जो प्रतिभाशाली है उनके लिए अलग से ट्यूशन बिना शुल्क प्रावधान के भी प्रदान करता है।

शोध विधि

''प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने वैयक्तिक अध्ययन विधि का प्रयोग किया है ।''

न्यादर्श

शोधार्थी द्वारा शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए सौदेश्य प्रतिचयन न्यादर्श प्रतिचयन के द्वारा उदयपुर शहर का चयन किया गया। यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों सम्मिलित किया है। प्राचार्य (1), कार्यकर्ता (4), विद्यार्थी (60)

परिणाम

भारत की पहचान कुछ शहरों में होते हुए सात लाख गाँवों में है, लेकिन हम कस्बों/शहरों में रहते है तथा गाँवों का हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाया गया है। हमने तनिक ठहर कर यह जानने का प्रयास किया कि क्या इन गरीब ग्रामीणों के पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन है एवं पहनने को कपड़े है तथा क्या उनके पास धूप एवं बारिश से बचने के लिए उनकी अपनी छत इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति हेतु समय समय पर विभिन्न उपबन्धों एवं नीतियों द्वारा कई उपकरणों की स्थापना की जाती है उन्हीं में से रूरल इन्स्टीट्यूट एक है जिसने गाँवों में उत्पादकता और रोजगार के अवसरों में वृद्धि हेतु विभिन्न योजनाओं को क्रियान्वित करते हुए रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाये जिसके तहत ऐसे कार्यक्रम सुनियोजित करवाऐं जैसे – स्वास्थ्य शिक्षा, कृषि में परम्परागत तकनीक सुधार औद्योगिक इकाइयों का सृजन, बुनियादी सुविधाओं का विकास, भूमि सुधारों का उत्तम ढंग से क्रियान्वित किया जाना तथा साथ में विद्या भवन ने तात्कालिक सामाजिक धारा के विपरित सहशिक्षा पाठ्यचया से इत्तर गतिविधियाँ तथा विभिन्न धर्मों, जातियाँ और वर्गों के विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार की धारणा को आगे लाने का प्रयास किया जो उस समय के लिए एक क्रान्तिकारी कदम था। विद्या भवन युवाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने में अपनी अहम भूमिका निभायी है।

विद्याभवन रूरल इन्स्टीट्यूट की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य यही था कि ग्रामीण क्षेत्रों एवं कच्ची बस्तियों में शिक्षा से वंचित बालकों को शिक्षा से जोड़कर उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से तथा जो बालक आज भी शिक्षा से वंचित है उन्हें येन–केन प्रकार से शिक्षा से जोड़ा जाए, ऐसे बच्चों के लिए विद्या भवन रूरल इन्स्टीट्यूट दृष्टि एवं लक्ष्य को पैना करते हुए कई प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रहा है। संस्थान का विगत छः दशकों के कामकाज का विश्लेषण करने के बाद यह ज्ञात हुआ कि संस्थान ने ग्रामीण उच्च शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यवान सेवा प्रदान की तथा समिति का भी मानना है कि इस तरह संस्थान को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए तथा ग्रामीण विकास के संदर्भ में ऐसे प्रयासों के लिए वित्तीय सहायता दी जानी चाहिए तथा भारत सरकार से अनुदान समाप्त होने से राज्य सरकार को वर्तमान प्रतिशत से अपना अनुदान 100% बढा देना चाहिए तथा साथ में संस्थान के विशेष सुविधा को ध्यान में रखते हुए कर्मचारियों के पेटर्न और अनुदान सहायता नियमों द्वारा अनुमोदित व्ययों की सामान्य रूपरेखा उदारता से लागू किया जाना चाहिए। समिति ने सुझाव दिया कि व्यय मे कुछ अर्थव्यवस्था का उपयोग प्रतिष्ठान और अन्य व्यय में किया जा सकता है। प्रबंधन को संस्थान के बजट को संशोधित करने के लिए कहा गया और कार्यकुशलता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना कर्मचारियों के कार्य भार पर विचार करते हुए व्यय को कम करने का प्रयास किया गया।

विस्तार और अनुसंधान विभाग को मजबूत किया जायेगा और वर्तमान बजटीय सीमाओं के दायरे के भीतर उनकी गतिविधियों के क्षेत्र को पुर्नजीवित किया जायेगा तथा साथ में संस्थान को अपनी गतिविधियाँ और कार्यक्रमों का नया स्वरूप देने के लिए एक स्वायत्ता दी जानी चाहिए और राज्य सरकार समय समय पर अपनी प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए स्वतंत्र यंत्रण स्थापित कर सकती है। इस संस्थान में लम्बे समय से बी.ए., एम. ए. (ग्रामीण समाजशास्त्र राजनीतिकशास्त्र) बी.एस.सी. (जीव विज्ञान) तथा बी.एस.सी. (गणित) जैसे पाठ्यक्रम चल रहे है लेकिन समय और समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु विगत दो दशकों में अनेक नये पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये । बी.बी.एम. जैसे पाठ्यक्रम की शुरूआत की गयी राजस्थान में विद्याभवन रूरल एक ऐसा महाविद्यालय है, जहाँ बी.बी.एम. प्रारम्भ करने वाला प्रथम स्थान प्राप्त महाविद्यालय है। इस संस्थान में शहरी व ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों के विद्यार्थी अध्ययनरत है कि अजा/जजा छात्रों के लिए ग्रह किराया आदि की व्यवस्था भी है किन्तु समिति की सिफारिशों के बावजूद भी राजस्थान सरकार छः साल की अवधि में कोई निर्णय नहीं ले सकती और आवर्ती व्यय पर केवल 85% अनुदान करना जारी रखा विगत छः वर्षों की अवधि के दौरान कोई गैर आवर्ती अनुदान जारी नहीं किया गया अतः राजस्थान सरकार ने इस संस्था को महाविद्यालय के रूप में स्थापित किया गया।

वर्तमान स्थिति

1956 में ग्रामीण संस्थान के तौर पर स्थापित विद्याभवन रूरल इन्स्टीट्यूट अब एक स्वतंत्र संस्था है किन्तु आज भी गाँवों के युवक युवतियों हेतु दक्षता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित होते है। रोजगार के अवसर मुहैया कराने हेतु समय समय पर केम्प आयोजित किये जाते है। अभी हाल ही मैं ग्रामीण विकास हेतु इस संस्थान ने प्रकृति केन्द्र साधना के पास भीलों के बेदला को गोद लिया है तथा साथ ही सेवा मन्दिर द्वारा संचालित चणावदा में वृद्ध महिलाओं को पेंशन दिलाने का कार्य किया गया एवं इस महाविद्यालय द्वारा कृषि विज्ञान में प्रशिक्षण दिलाने हेतु युवाओं को प्रेरित किया गया है तथा

केम्प के माध्यम से ग्रामीणों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाता है जिसके अन्तर्गत शिक्षा का प्रचार–प्रसार, बाल विवाह से सम्बंधित जानकारियाँ। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष 10 दिसम्बर को उदयपुर (टाउनहॉल) के पास विभागीय सदस्य मिलकर रैली आयोजित करते है तथा लोगों का मानवाधिकार के प्रति जाग्रत करते है तथा विगत वर्षों में निर्भया केस का रोष जताते हुए रेली आयोजित की गयी जिसका विषय बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं के नारे के साथ सम्पन्न हुयी। संस्थान द्वारा शिविर व मेले का आयोजन कर ग्रामीण विकास हेतु जागरूकता का प्रयास सराहनीय है साथ हो संस्थान द्वारा पत्राचार शिक्षा ग्रामीण विकास हेतु जागरूकता का प्रयास भी सराहनीय है।

किन्तु समय–समय पर इस संस्थान के सामने मुख्य चुनौतियाँ रही इनमें से प्रमुख वित्तीय व्यवस्था है तथा साथ ही निरन्तर खुलती जा रही गुणवत्ता विहोन शिक्षा ने विकास से सम्बंधित के स्वरूप को ही बदल दिया है। फलस्वरूप बदलते परिवेश में शिक्षा के क्षेत्र में कई तरह की चुनौतियाँ आई है।

हाई प्रोफाइल संस्थाओं ने बालकों के मात्रात्मक में तो वृद्धि की है किन्तु गुणवत्ता युक्त शिक्षा से वंचित कर दिया। शिक्षा को सिर्फ जीविकोपार्जन का साधन मात्र ही मान लिया जिससे उन्हें एक अच्छा नागरिक बनाने में असफल हा रही यह संस्थान के सामने चुनौतो का विषय है तथा संस्थान के कार्यकर्ताओं के अनुसार ग्रामीण विकास में ग्रामवासियों में सहयोग का अभाव रहता है व अपनी निजी कार्यों में व्यस्तता के कारण आवासीय शिविरों में भाग लेना पसंद नही करते है। फलस्वरूप इनसे मिलने वाले लाभों से वंचित हो जाते है। दूसरी समस्या प्रारम्भिक अवस्था में युवाओं का रूझान इन विभिन्न पाठ्यक्रमों के प्रति पाया गया किन्तु कालान्तर में विभिन्न कारणों से विशेषकर रोजगार के अवसर न मिलने से इनकी लोकप्रियता कम हो गयी।

शैक्षिक महत्व :–

स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण विकास के लिए कुशल एवं प्रशिक्षित युवा कार्यकर्ता तैयार हो सके इसके लिए रूरल इन्स्टीट्यूट की स्थापना की गयी इन्हीं में से विद्या भवन रूरल इन्स्टीट्यूट को चुना गया। रूरल इन्स्टीट्यूट का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के विकास की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए विशेष पाठ्यक्रमों का निर्माण किया गया जिसके अन्तर्गत कृषि से सम्बंधित गतिविधियां ग्रामीण एवं लघु उद्योग तथा कौशल सामाजिक, आर्थिक आधारभूत ढाँचा सामूहिक सेवाऐं एवं सुविधाएं तथा सबसे उपर ग्रामीण क्षेत्रा में मानव संसाधन सम्मिलित है। बदलते परिवेश में गाँवों को प्रभावित किया है। सरकारी अभिकरणों द्वारा ग्रामीण विकास कार्यक्रम आज पूरे देश में जोर–शोर से चल रहा है परन्तु आज भी भारतीय समुदाय का काफी बड़ा वर्ग जिसके लिए योजनाओं का निर्माण हुआ है। इससे प्रत्यक्षतः कोई लाभ नही उठा पा रहा है। इसके पीछे फैली अज्ञानता, अशिक्षा, निर्धनता, बेरोजगारी है। अज्ञान से ज्ञान के लिए शिक्षा में परिवर्तन में शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक अच्छी तरह से तैयार की गयी शिक्षा प्रणाली न केवल जिम्मेदार समाज बनाती है बल्कि विकसित समृद्ध और जिम्मेदार राष्ट्र का निर्माण हेतु संवेदनशील नागरिक भी बनाती है।

अपने विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिकता समाज के लिए शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए मई 1930 में डॉ. मेहता नें एक सार्वजनिक बैठक बुलाई और एक शासन निकाय की स्थापना की गई।

एक विशेष आर्थिक चुनौतियाँ तथा अपने प्रारम्भिक स्वरूप में बदलाव करते हुए संस्थान को अकादमी महाविद्यालय के रूप संचालित किया जाने लगा किन्तु ग्रामीण विकास और ग्रामीण प्रसार सेवाओं के पाठ्यक्रम संचालित होते रहे जो इन संस्थाओं की अपनी विशषता बनाए हुए है। प्रसार कार्यक्रमों के अन्तर्गत विगत वर्षों में इस संस्थान ने बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किये जो कि सराहनीय हैं। इसके अन्तर्गत गाँव को गोद लिया है तथा केम्प एवं शिविर के माध्यम से ग्रामीणों को अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत करना।

साहित्यावलोकन

विदेशों में किये गये शोध कार्य

1. LuKem year, Anma (2000) Expensive, Childrens poor family out of pocket Expenditures for the cure of disabled and thronically III children in welfare families" University of Nevada has vegas USA.
2. James Mark (2003) Evaluating rural Primary education development programs. In Low income countries a comparative study of the nature and process of evaluator activities and their role in improving quality Ph.D. University of Bristal.

इस शोध उद्देश्यों के अन्तर्गत शोधार्थी ने कम आमदनी वाले देशों में गरीब ग्रामीण बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा के विकास की गतिविधियों की प्रकृति व प्रक्रिया और शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में प्रायोजक की भूमिका को जानना शोध विधि के रूप में तुलनात्मक केस अध्ययन एवं उपकरण के रूप में अवलोकन, अर्द्धसंरचित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष में यह पाया गया कि स्कूलों में विकासशील कार्यक्रम वास्तविक रूप में तभी संभव हो जब गुणात्मक विकास जो कि मूल्यांकन गतिविधियों के विकास के द्वारा संभव है।

भारत में किये गये शोध

1. सालंकी भारत सिंह (2008) ''नवोदय विद्यालय का केस अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया है। इस शोध कार्यक्रम में नवोदय विद्यालय की स्थापना के उद्देश्य का अध्ययन विद्यालय की प्रशासनिक संरचनों का प्रशासनिक संगठन, प्रशासनिक व्यवस्था, शैक्षिक व्यवस्था एवं भौतिक व्यवस्था, प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन करना। इस शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्राचार्य हेतु साक्षात्कार विधि तथा अध्यापक एवं विद्यार्थियों हेतु प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष से प्राप्त जानकारी कि शैक्षिक उन्नयन के लिए आवश्यकतानुसार शिविरों का आयोजन किया गया।

निश्कर्श

प्रस्तुत शोध में रूरल इन्स्टीट्यूट का ग्रामीण विकास में योगदान से सम्बंधित अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में संस्थान को अधिक उन्नत बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत किये है। शोधार्थी ने यह अनुभव किया कि वर्तमान समय में इस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर अध्ययन की आवश्यकता है। अध्ययन के छोटे न्यादर्श एवं कम समय के कारण निष्कर्ष को निकालने का प्रयास किया गया है। यह शोध इस क्षेत्र में कार्यरत भावी शोधकर्ताओं को प्रेरणा प्रदान कर सकेगा। शोधार्थी यह आशा व्यक्त करती है कि ऐसे प्रयास से रूरल इन्स्टीट्यूट डवलपमट में किये जा रहे प्रयास को नवीन दिशा प्रदान करने में निश्चित रूप से सहायक सिद्ध होगा।

सुझाव

महत्वपूर्ण साक्षात्कार करने से ज्ञात हुआ कि अभी भी इन जैसी संस्थाओं की आवश्यकता सुझाव के रूप में यह कहा जा सकता है कि देश में चुनी गयी ग्रामीण परिवेश के संदर्भ में विशेष पाठ्यक्रमों को संचालित किया जाना चाहिए तथा गांवों को ग्रामोत्थान के लिए शिक्षा प्रबंधन स्वास्थ्य, पर्यावरण आर्थिक उन्नयन तथा सामाजिक बदलाव के लिए विशेष रूप से सुनिश्चित किया जाये तभी जाकर गाँधी का हिन्द स्वराज्य का सपना साकार हो सकेगा। राष्ट के विकास एवं उत्थान में रूरल इन्स्टीट्यूट के योगदान का अध्ययन किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध छोटे न्यादर्श पर किया गया जिससे निष्कर्षों की स्पष्ट भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है इसलिए बड़े न्यादर्शो पर यह शोधकार्य सम्पन्न किया जा सकता है। किन्हीं दो ग्रामीण विकास से सम्बंधित संस्थानों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

ढ़ोढ़ियाल, एन, एन, फाटक ए.बी (1972) शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र
जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी
गुप्ता, एस.पी. (2003) सांख्यिकी विधियाँ इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन।
कोल, लोकेश (1998) शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली दिल्ली : विकास पब्लिशिंग हाउस।
मुखर्जी, रविन्द्रनाथ (2001) सामाजिक शोध एवं साँख्यिकी, नई दिल्ली : विवेक प्रकाशन
ओड, एल.के. वर्मा, जे. पी. (1990) शैक्षिक प्रशासन जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी
श्रीवास्तव, डी.एन. (2000) अनुसंधान विधियाँ आगरा : साहित्य प्रकाशन।
तरूण, हरिवंश (2001) विश्व के महान शिक्षणशास्त्री समद्वारा प्रकाशन
शर्मा भगवती प्रसाद (1995) विधा भवन के शैक्षिक नवाचार एवं उनके प्रति अध्यापकों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति, एम.एड. लघुशोध प्रबंध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर।
शर्मा स्मृति (1995) ने नवोदय विद्यालय में संगठनात्मक का वातावरण का अध्ययन। विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर से लघु शोधकार्य किया।
खियाणी बेला (1988) ने गुरू मिल योजना, वैयक्तिक वृत्त अध्ययन : विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से लघु शोध कार्य किया।